IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 3, Issue 1, March 2020
Impact Factor: 4.819

गीता के नैतिक दर्शन के परिप्रेक्ष्य मे पाश्चात्य उपयोगितावाद का समीक्षात्मक अनुशीलन ।

डॉ. इन्दु प्रकाश सिंह

सहायक प्रोफेसर , दर्शन शास्त्र ,

हेमवती नन्दन बहुगुणा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नैनी ,प्रयागराज ।

dripsingh1975@gmail.com

सारांश-

शाब्दिक उत्पत्ति की दृष्टि से उपयोगितावाद अंग्रेजी शब्द यूटिलीटेरियनिज्म [**Utilitarianism**] के लिए हिन्दी में प्रयुक्त होता है। जान स्टुअर्ट मिल ने इस अंग्रेजी शब्द को गढ़ा था; उसकी इस विषय पर जो पुस्तक है उसका नाम भी 'यूटिलीटेरियनिज्म' है।1 किन्तु यूटिलिटी (उपयोगिता) शब्द मिल से भी प्राचीन है। मिल ने ''अधिक से अधिक लोगों को अधिक से अधिक सुख'' इस सिद्धान्त को यूटिलिटी कहा हैं इसके पूर्व ह्यूम और बेंथम ने इस सिद्धान्त को अभिव्यक्त किया था, परन्तु मिल ने इसे एक शास्त्रीय नैतिक मत का रूप दिया। इस प्रकार किसी कार्य, नीति, निर्णय या विकल्प से कुल मिलाकर प्राप्त होने वाले सुख की मात्रा को 'उपयोगिता' कहा जाता है; तथा मानवीय गतिविधियों को उपयोगिता के आधार पर जांचने के सिद्धान्त को उपयोगितावाद कहते हैं। इसमें परिणाम पर ध्यान दिया जाता है उसके प्रयोजन या प्रक्रिया पर नहीं।

DOI: 10.48175/IJARSCT-440E